संपादकीय

आग में घी डाला

कासगंज में सख्त कार्रवाई से स्थिति पर नियंत्रण हो जायेगा। लेकिन अन्य जगह इसकी प्रतिक्रिया नहीं होगी, इसकी कोई गारंटी नहीं है। इसलिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जिलाधिकारी बरेली की बात पर भी गौर करना होगा। जिससे अन्य जगह दंगे की पुनरावृत्ति न हो।

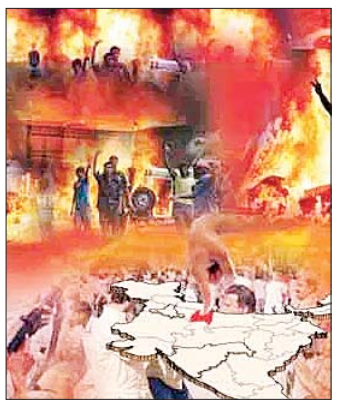

उत्तर प्रदेश के कासगंज में साम्प्रदायिक हिंसा के दौरान बरेली के जिलाधिकारी का बयान आग में घी डालने वाला साबित हुआ है। हालांकि उनकी बात सच हो सकती है। लेकिन नाजुक मौके पर सच होते हुए भी यह बोलना नहीं चाहिए था। जिलाधिकारी ने ट्वीट किया कि मुस्लिम मोहल्ले में जबरदस्ती जुलूस निकालना और फिर वहां पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाना ठीक नहीं है। क्या उस क्षेत्र में रहने वाले पाकिस्तानी हैं? दरअसल जिलाधिकारी ने अपने अनुभव के आधार पर यह बात कही होगी। जिलाधिकारी पर जिले की कानून व्यवस्था बनाये रखने की जिम्मेदारी होती है। उनके जिले में ऐसी घटना हुई थी। इसलिए उन्होंने ट्वीट किया। सबसे ज्यादा आपत्तिजनक यह है कि कासगंज में दंगा भड़का हुआ है और एक आईएएस अधिकारी इस तरह का बयान दे रहा है तो स्थिति सुधरने की जगह बिगड़ सकती है। यह बात वह अधिकारी भली भांति जानता है। देश में कहीं भी दंगा हो तो अन्य जगह भी सतर्कता बरती जाती है। अन्य जगह यदि भड़काऊ बयानबाजी होगी तो व्यापक प्रतिक्रिया होगी और दंगा फैलता चला जायेगा। कासगंज के मामले में पुलिस अधीक्षक का तबादला कर दिया गया है। केन्द्र सरकार ने भी इस मामले को गंभीरता से लेते हुए राज्य सरकार से रिपोर्ट मांगी है। अभी यह नहीं कहा जा सकता है कि मुस्लिम मोहल्ले में लोग जुलूस निकाल रहे थे और पाकिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाये तो हिंसा भड़क उठी। यह बात जरूर साबित हो गई है कि घर की छत से गोली चलाई गई थी, जिससे युवक की मौत हो गई। पुलिस ने उस मकान से पिस्टल और बम भी बरामद किया है। बम बरामद होने से जाहिर होता है कि दंगे की तैयारी पहले से थी। लोग मौके की तलाश में थे। खुफिया एजेंसियां लगातार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकार को कानून व्यवस्था के बारे में जानकारी देती रही हैं। योगी आदित्यनाथ की सरकार को विफल करने की साजिश से इन्कार नहीं किया जा सकता है। कासगंज में सख्त कार्रवाई से स्थिति पर नियंत्रण हो जायेगा। लेकिन अन्य जगह इसकी प्रतिक्रिया नहीं होगी, इसकी कोई गारंटी नहीं है। इसलिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जिलाधिकारी बरेली की बात पर भी गौर करना होगा। जिससे अन्य जगह दंगे की पुनरावृत्ति न हो। कुल मिलाकर जिलाधिकारी बरेली को यह ट्वीट फिलहाल नहीं करना चाहिए था।

अन्याय की पराकाष्ठा

हालांकि पूरे मामले की जांच की जा रही है। लेकिन प्रारंभिक स्तर पर ही यह मामला सभ्य समाज को झकझोर देने वाला है। न्यायपालिका से जुड़े व्यक्ति से लोग न्याय की गुहार लगाते हैं। पीड़ित को जज से उम्मीद होती है कि वह उनकी पीड़ा को समझेगा और आरोपी को सजा देगा।

हरिद्वार में एक महिला जज के घर से जिला जज और पुलिस अधिकारी ने बंधक बनाकर रखी गई नाबालिग बालिका को रिहा कराया। उस किशोरी के शरीर पर चोट के 20 निशानों की पुष्टि चिकित्सकीय परीक्षण में हुई है। यह कार्रवाई हाईकोर्ट के आदेश पर हुई। हाईकोर्ट की जानकारी में लाया गया था कि नैनीताल जिले की एक नाबालिग बालिका को जज ने बंधक बना रखा है। बालिका ने भी बयान दिया है कि उससे घर का काम लिया जाता था। उसके साथ मारपीट की जाती थी। हालांकि पूरे मामले की जांच की जा रही है। लेकिन प्रारंभिक स्तर पर ही यह मामला सभ्य समाज को झकझोर देने वाला है। न्यायपालिका से जुड़े व्यक्ति से लोग न्याय की गुहार लगाते हैं। पीड़ित को जज से उम्मीद होती है कि वह उनकी पीड़ा को समझेगा और आरोपी को सजा देगा। लेकिन यहां तो आरोपी वह है जिससे न्याय की उम्मीद होती है। ऐसे में न्याय की कल्पना कराना ही व्यर्थ है। बाल श्रम कानून के तहत किसी भी नाबालिग को घरेलू नौकर की तरह रखना उचित नहीं है। यह बात उस जज के संज्ञान में भी होगी। यदि एक बार को यह मान लिया जाये कि नाबालिग बालिका के परिवार वालों ने मजबूरी के कारण उसे जज के यहां घरेलू नौकरानी बनाया था तो भी उस पर जुल्म ढहाने का तो कोई औचित्य ही नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय बाल दिवस पर हर साल बाल मजदूरों के बारे में मीडिया में बहुत से खुलासे किये जाते हैं। विशेष रूप से जूते पालिश करते बच्चे, कचरा बीनते बच्चे, जूठे बरतन धोते बच्चे, कुपोषण के शिकार बच्चों के चित्र प्रकाशित किये जाते हैं। फिर भी बाल श्रमिक प्रथा पर अंकुश नहीं लगाया जा सका है। इन सब कानूनों की जानकारी आरोपी जज को भी है। पहली नजर में तो वह नाबालिग किशोरी को घरेलू नौकरानी बनाने के अपराध की दोषी है। दूसरे नंबर पर उसके साथ मारपीट की अपराधी। तीसरा अपराध उसे बंधक बनाने का है। इन तीनों अपराधों में यदि ऐसा व्यक्ति दोषी होता, जिसे कानून की जानकारी नहीं होती तो सजा कम हो सकती थी। लेकिन एक जज पर यह दोष सिद्ध हो जाने पर सजा और कठोर हो सकती है। हाईकोर्ट के आदेश पर कार्रवाई हुई है तो पीड़िता को न्याय और दोषी को सजा की उम्मीद बलवती हो गई है।

बसपा का उभार भाजपा के लिए चिंता

14 नगर निगमों में महापौर के पद जीत कर जश्न मनाने वाली भाजपा के लिए चिंतन की घड़ी है। इन चुनावों के असली आंकड़े सामने आने के बाद बहुत कुछ बदला-बदला सा दिखने लगा है। उत्तर प्रदेश में नगर निकाय महापौर के 16, नगर पालिका परिषद् अध्यक्ष के 198, नगर पंचायत अध्यक्ष के 438 चुनाव हुए थे। इनमें से 14 महापौर, 68 नगर पालिका परिषद् के अध्यक्ष और 100 नगर पंचायत अध्यक्ष के पदों पर ही भाजपा की जीत हो सकी है। पार्षदों/सदस्यों के कुल 5261 पदों में से केवल 914 सीटें ही भाजपा की झोली में गयी हैं। शेष 4303 सीटों पर दूसरों का कब्जा रहा है। आंकड़े बता रहे हैं कि इस चुनाव में सर्वाधिक सीटें निर्दलीयों के पास हैं। प्रमुख 652 यानि अध्यक्ष पदों में से 224 पर निर्दलीय काबिज हुए हैं।

आदम गोंडवी ने कभी लिखा था- 'तुम्हारी फाइलों में गांव का मौसम गुलाबी है, मगर ये आंकड़े झूठे हैं ये दावा किताबी है।' यह शेर मौजू बैठ रहा है नगर निकाय चुनाव के परिणामों पर। जिन परिणामों को लेकर भाजपा इतरा रही है, दरअसल उसके लिए ये परिणाम बहुत चिंता में डालने वाले हैं। 14 नगर निगमों में महापौर के पद जीत कर जश्न मनाने वाली भाजपा के लिए चिंतन की घड़ी है। इन चुनावों के असली आंकड़े सामने आने के बाद बहुत कुछ बदला-बदला सा दिखने लगा है। उत्तर प्रदेश में नगर निकाय महापौर के 16, नगर पालिका परिषद् अध्यक्ष के 198, नगर पंचायत अध्यक्ष के 438 चुनाव हुए थे। इनमें से 14 महापौर, 68 नगर पालिका परिषद् के अध्यक्ष और 100 नगर पंचायत अध्यक्ष के पदों पर ही भाजपा की जीत हो सकी है। पार्षदों/सदस्यों के कुल 5261 पदों में से केवल 914 सीटें ही भाजपा की झोली में गयी हैं। शेष 4303 सीटों पर दूसरों का कब्जा रहा है। आंकड़े बता रहे हैं कि इस चुनाव में सर्वाधिक सीटें निर्दलीयों के पास हैं। प्रमुख 652 यानि अध्यक्ष पदों में से 224 पर निर्दलीय काबिज हुए हैं। यदि इसे वोट प्रतिशत की नजर से देखें तो जिस भाजपा को अभी विधानसभा चुनाव में 43 फीसद वोट मिले थे वह नगर निकाय में 30 फीसद से भी नीचे खिसक गयी है। निर्दलीय 32 फीसद वोट बटोर ले गए हैं। अब सबसे पहले बात करते हैं महापौर की दो बड़ी सीट जीत कर सभी की नींद उड़ा देने वाली बसपा की। भाजपा के गढ़ रहे मेरठ और अलीगढ़ जैसी सीटों का बसपा के साथ जाना बहुत कुछ कहता है। इसके साथ ही बसपा ने आगरा, झांसी में जिस तरह जोरदार टक्कर दी है वह भी भाजपा के लिए चिंता का कारण हो सकता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बसपा बहुत ताकतवर होकर उभरी है। नगर पालिका में भी वह कहीं सपा के बराबर और कहीं उससे भी आगे रही है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की राजनीति के केंद्र और भाजपा के गढ़ मेरठ में भी मायावती की बसपा ने भाजपा को धूल चटा दी। भाजपा के कद्दावर नेता और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मी कांत बाजपेयी के शहर मेरठ में भाजपा की यह पराजय बहुत कड़े संदेश दे रही है। यहां हाथी निशान वाली पार्टी की प्रत्याशी सुनीता वर्मा 229,238 वोट पाकर विजेता रहीं। भाजपा प्रत्याशी कांता कर्दम को 204,397 मत पाकर दूसरे नंबर से ही संतोष करना पड़ा। पहले से भाजपा के पास रही अलीगढ़ नगर निगम में भी बसपा के मोहम्मद फुरकान 125682 मत पाकर विजेता रहे। उन्होंने भाजपा उम्मीदवार को 10,445 मतों से हराया। सपा और कांग्रेस दोनों के ही प्रत्याशी मुकाबले में कहीं नहीं दिखे। पश्चिम में बाकी निकायों में भी बसपा ने अच्छा प्रदर्शन किया। प्रदेश की 198 नगर पालिकाओं में से बसपा को 35 सीटें मिली हैं जो सपा के 36 से मात्र एक कम है। प्रदेशभर में भाजपा को जहां भी कड़ी टक्कर मिली वह बसपा के उम्मीदवारों ने ही दी। इन चुनावों में बसपा की इस वापसी को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि विधानसभा चुनावों में मिली करारी हार के बाद पार्टी सुप्रीमो मायावती ने संगठन को दुरुस्त करने के लिए राज्यसभा से इस्तीफे का जो दांव चला था वह काम करता दिख रहा है। निकाय चुनावों में बसपा को जिन सीटों पर हार का मुंह देखना भी पड़ा है वहां भी उसका प्रदर्शन कमतर नहीं रहा। यह ध्यान देने वाला तथ्य है कि राज्यसभा से इस्तीफा देने के बाद मायावती लगातार संगठन के स्तर पर काम कर रही हैं, इसके लिए उन्होंने कई जगह पार्टी पदाधिकारियों को बदला है तो कई जगह पुराने और विश्वस्त चेहरों को दोबारा कमान सौंपी गई है। संगठन के प्रति मायावती की गंभीरता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि जिस समय यूपी में निकाय चुनावों की मतगणना चल रही थी उसी दौरान वह राजस्थान में स्थानीय कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रही थीं। यह भी उल्लेख करना जरूरी है कि बसपा की यह दमदार उपस्थिति तब सामने आयी है जब स्वामी प्रसाद मौर्य तथा नसीमुद्दीन जैसे चेहरे उनका साथ छोड़ चुके हैं। पहले लोकसभा चुनावों में सूपड़ा साफ और फिर यूपी के विधानसभा चुनावों में बुरी गत के बाद मायावती ने पार्टी को मजबूत करने के लिए खुद ही मोर्चा संभाला। अपने दलित वोटरों की जमात का भरोसा जीतने में मायावती अब फिर कामयाब होती दिख रही हैं। दरअसल यूपी के साथ ही देशभर में दलितों के खिलाफ हुए तमाम मुद्दों को मायावती ने प्रमुखता से उठाया, इस दौरान हर बार उनके निशाने पर भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी ही रहे। दलित अस्मिता के मुद्दे को मायावती ने पूरे जोर शोर से तूल दिया, जिसका नतीजा ये रहा कि पहले लोकसभा और फिर विधानसभा चुनावों में उनका जो कोर दलित वोट बैंक हिंदुत्व के नाम पर उनसे छिटक कर भाजपा के पाले में चला गया था वो निकाय चुनावों में वापस लौटता दिखा। अबकी विकल्प की तलाश में राह देख रहे मतदाताओं को मायावती में वह विकल्प दिख गया। उन्हें मुस्लिम वोटरों को भी साथ मिला, जिन्होंने जहां जहां बसपा उम्मीदवार मजबूत स्थिति में दिखा वहां वहां पूरी रणनीति के साथ उसके पक्ष में एकतरफा मतदान किया। खास कर मेरठ में बसपा उम्मीदवार की जीत इसकी एक बानगी भर हैं, जहां बसपा को मुस्लिमों का लगभग एकतरफा समर्थन मिला जबकि समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी दीपू मनोठिया मात्र 46,530 वोट पा सकीं, कांग्रेस को 29,201 वोट मिले। इसी सीट पर पिछले निकाय चुनाव में सपा उम्मीदवार रफीक अंसारी को एक लाख से ज्यादा वोट मिले थे। नगर निकाय के चुनाव परिणामों ने बहुतों को आइना दिखाया है। खासकर सभी पार्टियों के दिग्गजों को इस परिणाम ने बहुत गंभीर ढंग से चेतावनी दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या, कांग्रेस के शीर्ष नेता राहुल गांधी, सपा के अखिलेश यादव और रामगोपाल यादव तक के लिए यह चुनाव किसी चेतावनी से कम नहीं हैं। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और अब डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्या की विधानसभा सीट सिराथू की सभी सीटों पर भाजपा हार गयी है। कौशाम्बी जिले की नगरपालिका से भी सभी सीट भाजपा हार गयी है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के गोरखपुर नगर निगम में भाजपा को पूर्ण बहुमत नहीं मिल सका है। आदित्यनाथ वार्ड संख्या-68 (पुराना गोरखपुर) में वोटर हैं। इस वार्ड में निर्दलीय उम्मीदवार नादरा खातून ने भाजपा की उम्मीदवार माया त्रिपाठी को 462 वोटों से हराया। निर्दलीय उम्मीदवार नादरा खातून ने 1783 वोट मिले जबकि भाजपा प्रत्याशी माया त्रिपाठी को मात्र 1321 वोट मिले हैं। सीएम योगी के गढ़ गोरखपुर में मेयर पद पर लगातार तीसरी बार हैट्रिक लगाते हुए भाजपा ने जीत दर्ज की। भाजपा मेयर प्रत्याशी सीताराम जायसवाल ने 75823 वोटों के अंतर से सपा के राहुल गुप्ता को हराया है। वहीं, गोरखपुर नगर निगम के 70 वार्डों में से भाजपा को 27, सपा को 17, निर्दलीय को 18, बीएसपी को 5 और कांग्रेस को तीन सीट मिली हैं। मंत्री श्रीकांत शर्मा के मथुरा नगर निगम में भाजपा कैंडिडेट मुकेश आर्य बंधु ने कांग्रेस के मोहन सिंह को 22195 वोटों से हराया। भाजपा के मुकेश आर्य बंधु को 103021 वोट मिले। कांग्रेस उम्मीदवार मोहन सिंह को 80896 वोट मिले। बसपा के गोवर्धन सिंह को 32641 वोट मिले। सपा से श्याम मुरारी चौहान को 11139 वोट मिले। आप के गणेश माहौर को 5894 वोट मिले हैं।

-संजय तिवारी

स्वास्थ्य

तनाव से मिलता है सेहत को लाभ

तनाव आज के जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है। सभी शोधों में तनाव की अधिकता को सेहत के लिए खतरनाक बताया गया है किंतु हालिया एक शोध में जो ब्रिटिश लांगिविटी सोसायटी में किया गया है इसके मुताबिक तनाव जवान रखता है एवं सेहतमंद बनाता है। एक के बाद एक तनावपूर्ण कार्य करने से व्यक्ति अपने को ऊर्जावान एवं जवां महसूस करता है। शोधकर्ता हल्के-फुल्के तनाव एवं कुछ हड़बड़ी से भरे काम करने की सलाह देते हैं। ये अल्प तनाव एवं हड़बड़ी व्यक्ति के प्राकृतिक सुरक्षातंत्र को मजबूत बनाते हैं। उसे अल्जाइमर्स, आर्थराइटिस एवं हार्ट डिजीज से बचाता हैं। शोध में हल्के फुल्के तनाव को हर दृष्टि से फायदेमंद बताया गया है। एयर फ्रेशनर के खतरे भी- बंद कमरे में रहने वालों एवं ऐसे माहौल में अधिक देर तक काम करने वालों की संख्या बढ़ गई है। ऐसे स्थानों पर एवं अन्य अवसर व स्थानों पर एयर फ्रेशनर का उपयोग बढ़ गया है। यह वातावरण को तेजी के साथ सुगंध से भर देता है। एयर फ्रेशनर एवं एयरोसाल का सर्वत्र उपयोग बढ़ गया है। यह बच्चों में डायरिया एवं कान दर्द का कारण बन रहा है। यह महिलाओं को अवसादग्रस्त कर रहा है। एयर फ्रेशनर एवं एयरोसाल में मौजूद उड़नशील पदार्थ नुकसानदेह सिद्ध हो रहे हैं। लंदन की ब्रूनले यूनिवर्सिटी में किए गए अध्ययन का यही निष्कर्ष है कि एयर फ्रेशनर का प्रयोग कभी कभार करना कम खतरनाक है इसीलिए इसका रोजाना उपयोग नहीं करने की सलाह दी गई है। अल्जाइमर्स से बचाती काफी- चाय के बाद काफी दूसरा लोकप्रिय पेय पदार्थ है। चाय की भांति यह भी सर्वत्र मिल जाती है। इसके बनाने व पीने की भी अनेक विधियां हैं। काफी में चाय की तुलना में दोगुना नशा व ऊर्जा है। चाय व काफी दोनों के अपने-अपने नफा और नुकसान हैं। सेवनकर्ता व शोधकर्ता सबका अपना-अपना पृथक नजरिया है। काफी पर फिनलैंड में हाल ही एक शोध हुआ है जिसमें इसे स्मृति ह्रास एवं अल्जाइमर्स की बीमारी में दवा की भांति सहायक बताया गया है। काफी अल्जाइमर्स एवं याददाश्त में कमी की दूसरी समस्याओं से बचाती है। नियमित काफी पीने वालों को इन दो बीमारियों का खतरा अत्यंत कम हो जाता है। इनकी याददाश्त बढ़ जाती है। ठंड में डायबिटीज बच्चों को परेशान करती है ठंड के मौसम में दिन छोटे होते हैं और रातें बड़ी होती हैं। बच्चे मौसम के अनुकूल खाते अधिक हैं किंतु दिन के छोटे होने के कारण बच्चों की खेल गतिविधियां सीमित रहती हैं जिससे इनके शरीर में शुगर का स्तर बढ़ जाता है जबकि बच्चे यही सब अन्य मौसम में दिन के बड़े होने के कारण खेलकूद के माध्यम से खर्च कर डालते हैं इसलिए बच्चों की शुगर ठंड के मौसम में बढ़ जाती है जिससे इन्हें इससे जुड़ी अन्य परेशानियों का भी सामना करना पड़ता है। अतएव ठंड के मौसम में डायबिटीज पीड़ित बच्चों को खेलकूद में व्यस्त रहने दें। उन्हें तनाव मुक्त रखें। प्रवासी भारतीयों को हृदय रोग का खतरा ज्यादा होता है। भारत में रहने वालों के अलावा प्रवासी भारतीयों में भी हृदय रोगों का खतरा अधिक पाया गया है। स्थिति परिस्थिति एवं खान पान को बदलने के बाद भी प्रवासी भारतीयों के वंशानुगत गुण दोष उन्हें हृदय रोग के खतरों की ओर ले जाते हैं। इनमें हृदय धमनी रोग का खतरा और ज्यादा पाया गया है। एम्स एवं ब्रिटेन में किए गए शोध का परिणाम यही कहता है कि भारत की तुलना में प्रवासी भारतीयों में हृदय रोग का खतरा ज्यादा बढ़ भी जाता है। ब्रिटेन में रहने वाले प्रवासी भारतीयों की मृत्यु दर भारत की तुलना में चालीस प्रतिशत ज्यादा पायी गयी है। वहां वे चिकनाईदार भोजन एवं आराम तलब जीवन के कारण मोटे व हार्ट डिजीज के शिकार हो रहे हैं। टीवी, कंप्यूटर से बच्चे बीमार हो रहे हैं। बच्चे मनोरंजन के आधुनिक साधनों टीवी और कंप्यूटर के जाल में बुरी तरह फंस चुके हैं। इनमें अत्यधिक रूचि के कारण बच्चे कई घंटे एक जगह बैठे रहते हैं जिससे उनकी बाहरी खेल गतिविधियों में कमी आ गई है। इसके अतिरिक्त टीवी देखते समय या कंप्यूटर पर गेम खेलते समय खाया भी अधिक जाता है और एनर्जी भी खर्च नहीं होती है जिससे पाचन संबंधी विकार उत्पन्न होते हैं और विभिन्न प्रकार की बीमारियां जैसे मोटापा, शुगर, बीपी, हायपरटेंशन शरीर के अंदर प्रवेश कर जाती हैं और छोटी उम्र में ही आप रोगी बन जाते हैं। अतः इनसे बचने के लिए टीवी देखने व कंप्यूटर पर काम करने का समय निश्चित कर लें।

बोल वचन

दलित और पिछड़ा विरोधी मानसिकता के खिलाफ पाताल से भी लड़ता रहूंगा।

-लालू प्रसाद यादव, राजद प्रमुख।

काम की बात

सर्दी के मौसम में खुद को फ्रेश रखने और गर्माहट का एहसास करने के लिए कॉफी एक बेहतरीन विकल्प है। कॉफी ज्यादातर लोगों की पसंदीदा ड्रिंक होती हैं। कई स्टडी में यह बात साबित भी हो चुकी है कि कॉफी सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होती है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि कॉफी सिर्फ सेहत के लिए ही नहीं बल्कि, स्किन को खूबसूरत बनाने के लिए भी काफी लाभकारी होती है। आइए जानें कॉफी से स्किन को कैसे खूबसूरत बनाया जा सकता है। कॉफी को शहद के साथ मिक्स कर के स्क्रब के रूप में इस्तेमाल करने से चेहरे पर मौजूद डेड स्किन साफ हो जाती है। साथ ही यह स्किन को मॉइस्चराइज करके ड्राइनेस की समस्या को दूर करती है। झड़ते और रूखे बालों से परेशान हैं तो कॉफी का इस्तेमाल करना फायदेमंद होगा। कॉफी के इस्तेमोल से बालों का झड़ना कम हो जाता है। मेंहदी में कॉफी को मिक्स करके बालों में लगाएं। इससे झड़ते बालों की समस्या दूर होकर बालों में अच्छा कलर और चमक आएगी।

रजत पट

बुके लेकर सलमान के गेट पर खड़ी रहीं अर्शी

बिग बॉस से निकलने के बाद अर्शी खान भले ही दुनिया के लिए सेलिब्रिटी बन गई हों लेकिन मुंबई में उन्हें जिस अनुभव का सामना करना पड़ा शायद ही वह उसे याद करें। दरअसल, अर्शी खान को सलमान खान के गार्ड्स ने उनके घर में घुसने ही नहीं दिया। रिपोर्ट्स के मुताबिक अर्शी, सलमान से मिलने उनके घर तक पहुंची थीं। इसे लेकर सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल है। इसमें अर्शी सलमान के बांद्रा में स्थित गैलैक्सी अपार्टमेंट के बाहर नजर आ रही हैं। उनके साथ एक और महिला है। अर्शी के साथ मौजूद महिला के हाथ में बुके देखा गया। वह सलमान से मिलने आई थीं। इस वाकये को लेकर छपी खबरों की मानें तो अर्शी खान सलमान से मिलने के लिए बिना अपॉइन्टमेंट ही घर पहुंच गई। जब गार्ड्स ने पूछा तो अर्शी ने कहा कि सलमान से मिलने के लिए उनके मैनेजर ने अपॉइन्टमेंट लेने की कोशिश तो की लेकिन मिली नहीं। फिर क्या था बिना अपॉइंटमेंट गार्ड ने भी अर्शी को बाहर का रास्ता दिखा दिया। लेकिन तब भी अर्शी ने कहा कि अगर सलमान नहीं मिलना चाहते तो उनके पिता सलीम खान से ही मिलने दें मैं ये बुके उन्हें दे दूंगी। कहा जा रहा था कि अर्शी खान के एविक्शन की वजह सलमान के साथ शो पर बदतमीजी से पेश आना भी हो सकता है। शायद अर्शी को भी यही लग रहा है कि सलमान उनके व्यवहार से आहत हैं और उन्हें मनाना अर्शी के लिए बेहद जरूरी है। अर्शी चाहे बिग बॉस से बाहर हो गई हैं, लेकिन चर्चा में रहना उन्हें बखूबी आता है। कभी अपने इंटरव्यू तो कभी अपने इस तरह के हथकडों के जरिए।

मुझे कुछ कहना है

धर्मान्तरण को आतुर क्यों हैं?

महोदय,

पाकिस्तान के हंगू जिले के सिखों ने ये आवाज उठायी है कि उन्हें जबरदस्ती धर्मान्तरित किया जा रहा है। उन पर बहुत दबाव बनाया जा रहा है कि वह सब इस्लाम कुबूल कर लें। गिने चुने सिख हैं हंगू जिले में मगर वह भी इस जिले के लगभग सौ प्रतिशत इस्लामिक कट्टरपंथियों से बर्दाश्त नहीं हो रहे हैं। भारत सरकार ने इस पर संज्ञान लिया है और पाक उच्चायोग से बात करने की बात कही है। पाकिस्तान की कुल आबादी लगभग बीस करोड़ के आसपास है और कुल आबादी के लगभग 96 फीसदी लोग मुसलमान हैं। बीस करोड़ लोगों में 36 लाख के करीब हिन्दू रहते हैं पाकिस्तान में। 28 लाख के करीब ईसाई हैं और कुल बीस हजार सिख रहते हैं पाकिस्तान में। बीस करोड़ लोगों के बीच में सिर्फ और सिर्फ करीब साठ लाख के करीब ही ऐसे लोग हैं जिनका धर्म इस्लाम नहीं है। बाकी सब इस्लाम के ही मानने वाले हैं मगर ये कुल साठ लाख 'गैर मुस्लिम' लोग पाकिस्तानी कट्टरपंथियों की आंख में खटकते रहते हैं और ये इसी उधेड़बुन में लगे रहे हैं कि कैसे इन सबको मुसलमान बना लिया जाये। ये किस तरह की विचारधारा है जो इस कदर प्यासी है अपने धर्म में लोगों को घसीटने के लिए। ईसाईयत भी लोगों को अपने धर्म में घसीटने को आतुर रहती है मगर वह सेवा और लालच से इसे अंजाम देते हैं मगर मुसलमानों के साथ ऐसा क्या है जो उन्हें किसी भी तरह से दूसरों को अपने धर्म में लाने को मजबूर करता है?

-सुधांशु वशिष्ठ, हल्द्वानी।